जीवन

आज कुछ सामान लेने घर से बाहर गया था
तभी अचानक से रास्ते में जीवन दिख गया
उसने अपना चेहरा छूपा लिया मुझे देखते हीं
लेकिन मैंने उसे पहचान लिया था और पूछ बैठा कैसे हो?
उसने कोई उत्तर नहीं दिया
और आगे बढ़ गया
मैंने भी ढीठ की तरह पीछे से आवाज़ लगायी
शर्म आती है बात करने में
उसने कहा नहीं, जल्दी में हूँ कुछ काम है
मैंने कहा तुम्हें हमेशा जल्दी रहती है।
जब बच्चा था तो जवान होने की जल्दी,
होश संभाला, जिम्मेदारी आ गई
जिम्मेदारी के चक्कर में
कब बूढ़ा हो गया पता भी नहीं चला
मैं फिर उससे पूछा
कैसे हो?

उसने मुझसे पूछा तुम कैसे हो?
मैंने कहा अच्छा हूँ,कट रही है
और किस-किस से ये सवाल पूछोगे
यहाँ कोई मस्त नहीं है
वो मुस्कुराने लगा

मुझे उसकी मुस्कुराहट देखकर गुस्सा आया
मैंने उससे कहा तुम हमेशा हँसते क्यों रहते हो?
उसने कहा मुझमें और तुममें यही तो फर्क है